موضوع الخطبة : الناقض السادس: السحر

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

छठवां विच्छेद: जादूगरी

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِله إِلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं उसको सम्माननीय जानें, उसकी आज्ञा करें एवं अवज्ञा से वंचित रहें, एवं ज्ञात रखें कि माननीय दूतों की आवाहन की वास्तविकता ही है अल्लाह की उपासना एवं उसके नकारात्मक आदेशों से वंचित रहना, एकेश्वरवाद के विरुद्ध जो भी चीज़ें हैं, तुम में सर्वश्रेष्ठ स्थापित होने वाली चीज़ अल्लाह की उपासना में बहुदेव वाद, अर्थात विभिन्न प्रकार की उपासनाओं को अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए स्थापित करना, उदाहरण स्वरूप अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारना, अल्लाह के अतिरिक्त हेतु पशुओं का बलिदान देना, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए मन्नतें मानना, काबा के अतिरिक्त किसी

अन्य स्थान का चक्कर लगाना, उदाहरण स्वरूप: क़ब्रों एवं मज़ारों का चक्कर लगाना, एकेश्वरवाद के विरुद्ध जादू को अपनाना भी है एवं आज के उद्देश्य का शीर्षक भी यही है।

● जादू की परिभाषा, उसके प्रकार एवं उदाहरण:

अल्लाह के दासो! जादू उन तावीज़, गंडों, गांठों एवं झाड़-फूंक को कहा जाता है जो हृदय, शरीर अथवा दृश्य को प्रभावित करता है, एवं उन्हें रोगी बना देता है अथवा हत्या कर देता है, अथवा मानसिक शक्ति को प्रभावित करता है, अथवा पति पत्नी के बीच को दूरी उत्पन्न करता है, अथवा व्यापार आदि करने वाले दो व्यक्तियों के बीच घृणा को जन्म देता है।

(देखें: अल्-मुग़नी, किताबुल्-मुरतद, फ़स्ल फ़िस्सहर: ९/२९९)

अल्लाह के दासो! जादू दो प्रकार के होते हैं: एक वास्तविक द्वितीय काल्पनिक। वास्तविक जादू के तीन प्रकार हैं: एक प्रकार वह है जो शरीर को प्रभावित करता है एवं उसे रोगी बना देता है अथवा हत्या कर देता, द्वितीय प्रकार जो हृदय को प्रेम एवं घृणा के आधार पर प्रभावित करता है। उदाहरण स्वरूप पति के हृदय में पत्नी का प्रेम डाल देता है, जिससे वह घृणा कर रहा होता है अथवा इसके विपरीत। इस कारणवश पति पत्नी को एवं पत्नी पति को सुंदर दिखने लगती है, इसे (अ़त्फ़) के नाम से जाना जाता है, अथवा पत्नी को पति की दृष्टि में घृणित बना देता है जिससे वह प्रेम कर रहा होता है अथवा इसके विपरीत, इस कारणवश पति पत्नी को एवं पत्नी पति को कुरूप दिखने लगती है, इसे (सर्फ़) के नाम से जाना जाता है, वास्तविक जादू का तीसरा प्रकार वह है जो मानसिक शक्ति को प्रभावित करता है, इस कारणवश जादू किया हुआ व्यक्ति यह भ्रम रखता है कि उसने कोई काम किया है हालांकि उसने कोई काम नहीं किया है

इस जादू का उदाहरण वह है जो लबीद बिन अअ़सम नामक यहूदी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किया, इस कारणवश आपको यह भ्रम होता कि आपने कोई काम किया है हालांकि आप वह नहीं किए होते, कई महीनों तक आप इस जादू से प्रभावित रहे।

(बुख़ारी:५७६६, मुस्लिम: २१८९) अल्लाह के दासो! जादूगर अपने जादू हेतु दुष्टदेव से सहायता लेता है वह इस प्रकार की जादूगर जब जादू करने की इच्छा करता है, तो उसके आत्मा पर वह अपवित्रता एवं दुष्टता प्रकट होती है जिसके भीतर वह जादू किए हुए व्यक्ति को डालना चाहता है, इस कारणवश वह दुष्ट देवों की आत्मा से सहायता प्राप्त करता है फिर कुछ गांठें लगाता है एवं उसमें थूक के साथ फूंक मारता है, जिसे (नफ़स) के नाम से जाना जाता है, जिसका उल्लेख अल्लाह के कथन में आया है:

مِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِى ٱلْعُقَدِ .

अर्थात: और गांठें लगाकर उन में फूंक मारने वालियों की दुष्टता से भी मैं शरण चाहता हूं।

फूंक मारने वालियों का अर्थ वह आत्माएं हैं जो गांठों में फूंक मारते हैं, क्योंकि जादू का प्रभाव दुष्ट आत्माओं की ओर से ही होता है, एवं उनसे ही जादू का प्रभाव स्पष्ट होता है, इस कारणवश कि उन दुष्ट आत्माओं से ऐसी सांसें निकलती हैं जो दुष्टता एवं कठिनाई से मिलती जुलती है, एवं इसमें इसी से मिलता-जुलता थूक भी मिला होता है, इस कारणवश दुष्ट देवों के आपसी सहायते से जादू किए हुए व्यक्ति को कष्ट पहुंचाया जाता है, एवं अल्लाह के सांसारिक भाग्य की अनुमति से जादू स्थापित हो जाता है।

وَمَا هُم بِضَآرِّينَ بِهِۦ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ .

अर्थात: वह उसके साथ कभी भी कोई हानि पहुंचाने वाले नहीं थे परन्तु अल्लाह की अनुमति के अतिरिक्त।

(देखें: बदाइउल्-फ़वाइद, पृष्ठ संख्या: ७३६-७३७)

अल्लाह के दासो! कुछ व्यक्तिगण जादूगर के पास जाते हैं ताकि वे उसे उसके बाल बच्चों से और पत्नी से दूर कर दे, इस कारणवश वो लंबे समय तक अपनी पत्नी एवं बाल बच्चों से लापरवाह हो जाता है, ताकि वह एक चिन्हित समय तक अपनी पत्नी बाल बच्चों से अलग रहने में सक्षम हो सके एवं उनसे दूर क्रिया कर्म हेतु यात्रा कर सकें एवं जब लौटने का समय निकट आ जाए तो जादू समाप्त हो जाए।

अल्लाह के दासो! जादूगर लोगों को धोखे में रखते हैं इस कारणवश उनके पास जब कोई आता है तो उसके समक्ष वह क़ुरआन का सस्वर पाठ करते हैं ताकि उसे धोखे में डाल सके, और वह उनके संबंध में अच्छा भ्रम रखे, और यह समझे कि ये जादूगर अल्लाह के दोस्तों में से है, ऐसे व्यक्तिगण अपने जादू को चमत्कारिक क्रियाओं से विशेष स्वरुप प्रदर्शित करते हैं, जबकि वास्तव में वह जादू है, जिसे प्राप्त करना बल्कि उसके निकट जाना अवैध है, बल्कि उस से दूरी बनाए रखना एवं उसे नकारात्मक समझना अनिवार्य है।अल्लाह के दासो! काल्पनिक जादू का एक ही द्वार है, वह है दृश्य को प्रभावित करना, शरीर, हृदय एवं मानसिक शक्ति को नहीं, इस कारणवश जादू किया हुआ व्यक्ति वस्तुओं को, , अवास्तविक रूप में देखने लगता है, जबकि वास्तव में वह वस्तु कुछ भी परिवर्तित नहीं होती, यह वही जादू है जो फ़िरऔन के जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम के साथ किया, यह एक निकृष्ट कर्म है।

ए लोगो! इस प्रकार का जादू -अर्थात काल्पनिक जादू- वास्तव में स्थापित होता है, इस कारणवश यह देखने वाले के नेत्र में उसके वास्तविक एवं इंद्रिय-संबंधी प्रभाव स्थापित होता है परंतु यह प्रभाव उस वस्तु पर स्थापित नहीं होता जिसका वह दृश्य कर रहा होता है, बल्कि वह को वस्तु अपनी वास्तविक स्थिति में स्थित रहता है, उसकी स्थिति अल्लाह की अनुमति के बिना परिवर्तित नहीं होती, क्योंकि इसी एक वस्तु की वास्तविक स्थिति को दूसरी स्थिति में स्पष्ट करना यह अल्लाह की विशेषताओं में से है, जिसका कोई संगी एवं साझी नहीं।

आधुनिक काल में काल्पनिक जादू में वह जादू भी सम्मिलित है जिसे सर्कस या पहलवानी खेल के नाम से जाना जाता है, जिसके माध्यम से जादूगर लोगों की बुद्धि को प्रभावित करता है जिस कारण वश उन्हें वस्तुएं अपने वास्तविक स्थिति से कुछ विभिन्न दिखाई देती हैं, वे अपने काम को जादू नहीं कहते ताकि लोग घृणा ना करें, बल्कि पहलवानी खेल आदि का नाम देते हैं, किंतु इससे आदेश में कोई परिवर्तन नहीं होता, क्योंकि मान्यता वास्तविकता को ही प्राप्त होता है, नामों का नहीं। उनके काल्पनिक जादू का उदाहरण यह है कि कोई अपने बालों से कार को खींचता है, कोई अग्नि खाता हुआ दिखाई देता है, कोई धारदार हथियार से अपने ऊपर आक्रमण करता है, अथवा अपनी जीभ काट लेता है, कोई पशुओं के नितंब से प्रवेश करता है एवं मुंह से बाहर आता है, अथवा अपने वस्त्र के भीतर से पक्षी निकालता है, किसी की छाती पर लोगों की दृश्य के समक्ष कार चल जाती है, ये एवं इन जैसे अन्य कर्तव्य जो मनुष्य की शक्ति से बाहर हैं ये या तो दुष्ट देवों की सहायता से स्थापित होते हैं जो इस की बोझ का सहन करता है, अथवा देखने वालों के दृश्य में इसकी

कल्पना को जन्म दिया जाता है, एवं यह दोनों ही चीज़ें दुष्ट देवों की सहायता से ही पूरे होते हैं।जादूगर के कुफ़्र और जादू करवाने की अवैधता के साक्ष्य:

अल्लाह के दासो! जादूगरों का खंडन क़ुरआन के एक अन्य श्लोक में भी आया है:

وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ.

अर्थात: जादूगर कहीं से भी आए सफ़ल नहीं होता।

इसके अतिरिक्त यह श्लोक:

وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّاحِرُون.

अर्थात: जादूगर सफ़ल नहीं हुआ करते।

यह दोनों श्लोक जादूगर के समान सफ़लता को नकारता है, जो कि केवल उस व्यक्ति के पक्ष में होता है जो कुफ़्र में लथपथ हो चुका हो।

(देखें: अल्लामा शनक़ीती रहिमहुल्लाह का कथन अल्लाह ताआ़ला के फ़रमान: وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ. **के उल्लेख में, उन्होंने इस श्लोक से जादूगर के कुफ़्र को स्थापित किया है।)**

मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबानी अल्लाह के इस कथन में भी जादूगरों का खंडन आया है:

مَا جِئْتُم بِهِ ٱلسِّحْرُ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ سَيُبْطِلُهُۥٓ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ ٱلْمُفْسِدِينَ.

अर्थात: जो कुछ तुम लाए हो जादू है निश्चिंत बात है कि अल्लाह इसको तितर-बितर कर देता है अल्लाह ऐसे विद्रोहियों का काम नहीं बनने देता।

यह श्लोक इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि जादूगर पृथ्वी में विद्रोही ही होते हैं।

उपरोक्त उल्लेख किए गए श्लोक इस बात के साक्ष्य हैं कि जादूगर काफ़िर है एवं जादू कराना अवैध है और सृष्टि पर इसका बहुत ही हानिकारक प्रभाव पड़ता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी गणना बहुत ही घातक श्रेणी में की है। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहुअ़ंहु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सात घातक पापों से वंचित रहो, सहाबा ने प्रश्न किया: अल्लाह के दूत! वे क्या हैं? आप ने उत्तर दिया: अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना एवं जादू करना...हदीस।

(बुख़ारी:२७६६, मुस्लिम: ८९ ने रिवायत किया है।)

इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया, जिस ने भविष्यवाणी की या जिस के लिए की गई, जिसने जादू किया या उसके लिए किया गया वह हम में से नहीं है, जो व्यक्ति भविष्यवाणी करने के वाले व्यक्ति के पास गया एवं उसकी बात को सत्य स्वीकार किया तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित किए गए शरीयत (धर्म) को नकारा (कुफ़्र) किया।

{इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, मुसनद अल्-बाज़्ज़ार: (९/५२), (३५७८) इसके अतिरिक्त तबरानी ने अल्-कबीर: (१८/१६२) में रिवायत किया है, इनके रिवायत किए हुए शब्द कुछ इस प्रकार हैं: इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहुअ़ंहु से मरवी है कि उन्होंने एक व्यक्ति की कलाई में एक पीतल का कड़ा देखा उससे प्रश्न किया: यह क्या है? तो उसने कहा: मुझे बताया गया है कि इससे हाथ का दर्द दूर हो जाता है, फ़रमाया: यदि

तुम्हारी मृत्यु इसी स्थिति में हो गई तो तुम उसी की ओर सोंप दिए जाओगे, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया वह हम में से नहीं है...अल्-हदीस। हैसमी कहते हैं: इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, इसहाक़ बिन अबु रबीअ़ के अतिरिक्त इस हदीस के तमाम रावी सहीह हैं, वह भी विश्वसनीय हैं, देखें: मजमउ़ज़्ज़वाइद: (५/११७) इस हदीस को बाज़्ज़ार ने इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहुअ़ंहुमा से रिवायत किया है, जैसा कि कश्फुल्-स्तार (३०४३) में है, इस हदीस को अल्-बानी ने सहीहुल्-जामेइ़स्सग़ीर: (५४३५) एवं अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: (२१९५) में सहीह स्थापित किया है।}

बैहक़ी ने क़तादह से रिवायत किया है कि कअ़ब ने कहा: सब श्रेष्ठ एवं सर्वसम्मानीय अल्लाह का कथन है: सत्य दास वह नहीं है जो जादू करे एवं जिसके लिए जादू किया जाए, अथवा जो भविष्यवाणी करे एवं जिसके हेतु भविष्यवाणी किया जाए, अथवा जो अपशगुन ले एवं जिसके हेतु अपशगुन लिया जाए, मेरा सत्य दास वह है जिसका मुझ में आस्था हो एवं मुझ पर विश्वास करे। (देखें: शअ़बुल्-ईमान: ११७६)

ए विश्वासियों का समूह! जादू कराने हेतु जादूगर के निकट जाना कुफ़्र है, -अल्लाह का शरण- उसके काफ़िर होने का कारण यह है कि जाने वाला उस जादू से प्रसन्न हुआ अथवा उसे अपने ऊपर एवं मनुष्यों पर लागू होने को सराहा।

इतना ही नहीं बल्कि जादू की सराहना करना भी कुफ़्र है, भले ही वह उसे ना अपनाए, क्योंकि कुफ़्र की सराहना करना भी कुफ़्र है, यह ऐसा ही है जैसे कि कोई बुत पूजा को सराहे अथवा चलिपा (सलीब) के समक्ष माथा टेकने को सराहे तो ऐसा व्यक्ति काफ़िर है, भले ही वह बुत पूजा ना करे अथवा

चलिपा के समक्ष माथा ना टेके, इस कारणवश जो व्यक्ति यह कहे कि "मैं जादू करता हूं एवं ना ही इसकी ओर किसी को प्रोत्साहित करता हूं परंतु मैं जादू के कर्म को अपने गृह में एवं समाज में हृदय से स्वीकार करता हूं एवं इसे नहीं नकारता हूं"। तो ऐसा व्यक्ति भी काफ़िर है क्योंकि कुफ़्र की सराहना करना भी कुफ़्र है, एवं जो व्यक्ति अंततः अपने हृदय से कुफ़्र को ना नकारे उसके हृदय में विश्वास (ईमान) नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। -अल्लाह का शरण-जादूगर एक साथ तौहीद-ए-उलूहिय्यत एवं तौहीद-ए-रुबूबिय्यत दोनों में अल्लाह के साथ बहुदेववाद को स्वीकार करता है।

अल्लाह के दासो! ये जादूगर जो काल्पनिक जादू करते हैं और यह दावा करते हैं कि उनके पास वास्तविकता को परिवर्तन करने की क्षमता है, तो ऐसे लोग अपने इस कर्म के माध्यम से ब्रह्मांड में उलटफेर करने का दावा एवं अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से सहायता प्राप्त करने दोनों को एक साथ अपनाते हैं, प्रथम चीज़ रुबुबिय्यत में बहुदेववाद है एवं द्वितीय चीज़ उलूहिय्यत में बहुदेववाद है, एवं बहुदेववाद और भटकने हेतु यह दोनों कर्म बहुत हैं, रुबुबिय्यत में उन के बहुदेववाद का कारण यह है कि यह वास्तविकता को परिवर्तित करने का दावा करते हैं जबकि सत्य यह है कि वास्तविकता को परिवर्तित करना उस अल्लाह के हाथ में है जिसका कोई संगी नहीं, बल्कि अल्लाह ही केवल ब्रह्मांड का समाधान करता है वही सृष्टिकर्ता है वही किसी चीज़ को एक लिंग से द्वितीय लिंग में परिवर्तित करता है, बल्कि जादूगर दावा करते हैं कि वे इस विषय में अल्लाह का साझी है, इस संबंध में वे झूठे हैं, क्योंकि जिन वस्तुओं के परिवर्तित करने का ये दावा करते हैं वास्तव में वह चीज़ परिवर्तित नहीं होती, बल्कि जादू का प्रभाव समाप्त होते ही नेत्रों से उसकी योग्यता भी समाप्त हो जाती है,

फिर लोगों के समक्ष स्पष्ट हो जाता है फिर वास्तविकता अपने असली रूप वापस आ जाती है।

उलूहिय्यत में उन के बहुदेववाद का कारण यह है कि वे दुष्टदेवों से सहायता लेते हैं उनके समक्ष माथा टेकते हैं एवं उनकी उपासना करते हैं उनके नाम पर पशुओं का बलिदान देते हैं कभी कभार उन्हें प्रसन्न करने हेतु क़ुरआन का भी अपमान कर बैठते हैं, क्योंकि दुष्टदेव इस बात के अतिरिक्त उनसे कोई बदला नहीं चाहता कि वे कुफ़्र करें, एवं धरती पर विद्रोह करें इस कारणवश वह जादूगर उस दुष्टदेव की उपासना करता है, जो उसकी सेवा करता है यह उसके कुफ़्र का कारण है, एवं दुष्टदेव को यह लाभ प्राप्त होता है कि जादूगर उसकी उपासना करता है, क्योंकि आदम की संतान से दुष्टदेव इसी बात की इच्छा करते हैं, जैसा कि अल्लाह का कथन है:

أَلَمۡ أَعۡهَدۡ إِلَيۡكُمۡ يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعۡبُدُواْ ٱلشَّيۡطَٰنَۖ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٞ. وَأَنِ ٱعۡبُدُونِيۚ هَٰذَا صِرَٰطٞ مُّسۡتَقِيمٞ

अर्थात: ए आदम की संतान! क्या तुम से शपथ नहीं लिया था कि तुम दुष्टदेव की उपासना ना करना, वह तुम्हारा स्पष्ट स्वरूप शत्रु है, एवं मेरी ही उपासना करना, सीधा मार्ग यही है।

उपरोक्त उल्लेखों से यही ज्ञात हुआ कि किताब-व-सुन्नत एवं उम्मत की सहमति के प्रकाश में जादू एक अवैध कर्म है।

(देखें: मजमूउल्-फ़तावा: ३५/१७१)

● जादूगर को उस दुष्टदेव से क्या लाभ प्राप्त होता है जो उसकी जादूगरी में सहायक का कार्य करता है, एवं लोगों से उसे क्या लाभ मिलता है?

अल्लाह के दासो! जादूगर दुष्टदेवों से बहुत ही अधिक लाभार्थी होता है, उदाहरण स्वरूप यह कि दुष्टदेव उन्हें बहुत दूर स्थान तक बहुत ही शीघ्रता पूर्वक ले जाता है एवं इसी प्रकार अन्य लाभ हैं।

जादूगर मनुष्य की दुर्बलता का दुरुपयोग करता है ताकि इस जादू के बदले उससे बहुत सी संपत्ति प्राप्त कर ले। यह तीनों प्रकार के व्यक्ति दुष्टदेव जादूगर एवं जो जादू कराता है, वे अपने सांसारिक एवं परलोक के जीवन को नष्ट करता है।जादूगरों के संबंध में मुसलमानों एवं शासकों का दायित्व।

अल्लाह के दासो! जादू करने एवं जादूगरों के निकट जाने से वंचित रहना अनिवार्य है, इसके अतिरिक्त जांच पड़ताल से संबंधित जो विशेष विभाग हैं; जादूगरों के बारे में उन्हें सूचित करना आवश्यक है, इस शर्त के साथ कि वहां इस्लाम धर्म शासन हो, केवल इस से काम नहीं चलेगा कि मनुष्य जादूगर के निकट ना जाए, मुसलमान हेतु वैध नहीं कि वे जादूगरों के बैठक स्थलों में उपस्थित हो, उनकी संख्या बढ़ाए, उनका बाज़ार चमकाए, चाहे टेलीविज़न चैनल एवं एप्लीकेशन ही के माध्यम से क्यों ना हो, चाहे मनोविनोद ज्ञान अथवा उनके कर्तव्य से अवगत होने अथवा अन्य कारणों के आधार पर ही क्यों ना हो।

अल्लाह के दासो! जादूगरों एवं इस प्रकार के अन्य कुफ़रिया दुष्कर्म करने वालों पर अल्लाह के पापदंडों (हुदूद) का लागू करना सर्वश्रेष्ठ उपासनाओं में से है, क्योंकि यह लोग धरती पर विद्रोह फेलाते हैं। इसी कारणवश अबु हुरैरा रज़िअल्लाहुअंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया: धरती पर एक (अपराधी को) पापदंड देना धरती वालों हेतु लगातार वर्षा होने से अधिक श्रेष्ठ है।

(इस हदीस को इब्ने माजा: २५२८ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए सब उन्हीं के हैं, इनके अतिरिक्त नसई: ४९१९, इब्ने हि़ब्बान: ४३९८ एवं अह़मद २/३६२ ने रिवायत किया है, एवं अल्-बानी ने अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: २३१ में सहीह स्थापित किया है।)

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह का कथन है: इसी प्रकार यह भी अनिवार्य है कि उनके कर्म (जादूगरी) पर जिन वस्तुओं से सहायता मिलती है पूर्णत: नष्ट कर दिया जाए, उन्हें समान मार्गों पर बैठने से रोका जाए, घर का मालिक उन्हें घर भाड़े पर ना दे, यह अल्लाह के मार्ग में जिहाद का एक सर्वश्रेष्ठ भाग है।

(देखें: मजमूउल्-फ़तावा: ३५/९४-९७, कुछ संक्षेप एवं उलटफेर के साथ)

अल्लाह तआला हमें एवं आपको क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है|

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد !

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं यह ज्ञात रखें कि जादू से वंचित रहने की एक विधि यह भी है कि प्रातः एवं साईं का धार्मिक स्मरण व्यवस्था पूर्वक किया जाए, परंतु जादू के लग जाने के बाद उसके उपचार हेतु तीन विधियां हैं: प्रथम विधि: यह सबसे महत्वपूर्ण है: प्रातः एवं साईं का स्मरण व्यवस्था पूर्वक किया जाए, द्वितीय विधि: यह एक बहुत ही लाभदायक उपचार है, वह यह कि जादू की स्थान के खोज का प्रयास किया जाए कि वह धरती के नीचे है अथवा पर्वत के ऊपर, अथवा कहां है? जब स्थान की खोज हो जाए एवं उसे वहां से निकाल कर नष्ट कर दिया जाए तो जादू का समापन हो जाता है, तीसरी विधि: यह उस व्यक्ति हेतु लाभदायक उपचार है जिसे अपनी पत्नी से संभोग करने में बाधा आती हो, हरे बेर की सात पत्तियां ले, उन्हें पत्थर आदि से पीस ले फिर उसे एक बर्तन में रख ले फिर उस पर इतना पानी डाले जो स्नान करने योग्य हो, उस पानी में आयतल्-कुर्सी सूरह काफ़िरून, सूरह इख़लास सूरह फ़लक़, सूरह नास एवं जादू के उन श्लोकों का सस्वर पाठ करे जो सुरह अअ़राफ़, सूरह यूनुस एवं सूरह ताहा में आए हैं, (अर्थात: सुरह अअ़राफ़, श्लोक संख्या: ११७-१२०, सूरह यूनुस: श्लोक संख्या: ७९-८२, सूरह ताहा: श्लोक संख्या: ६५-६९) इसके पश्चात उस पानी में से तीन बार पी ले जिसमें इन श्लोकों का सस्वर पाठ किया गया हो, फिर बचे हुए पानी से स्नान कर ले, इस प्रकार रोग दूर हो जाएगा इंशाल्लाह! यदि इसे दो या दो से अधिक बार भी प्रयोग

करने की आवश्यकता पड़ जाए तो कोई बात नहीं जब तक कि रोग समाप्त न हो जाए।

आप यह भी ज्ञात रखें कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़े कर्म का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.

अर्थात: " अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो"।

हे अल्लाह! हमारे हृदय को पाखंडी पने से, हमारी उपासनाओं को दिखावे से एवं हमारे नेत्रों को विश्वासघात से पवित्र कर दे!

हे अल्लाह! हम तुझ से संसार एवं प्रलय के संपूर्ण भलाईयों की मांग करते हैं, जिनसे हम अवगत हैं या जिन से अज्ञात हैं, हम तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के संपूर्ण बुराइयों से जिनसे हम अवगत हैं अथवा जिनसे हम अज्ञात हैं!

हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे उपहारों के समापन होने से, तेरे स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरे अचानक आने वाले प्रकोप से, एवं तेरे हर प्रकार के क्रोध से!

हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं, एवं उस कथनी और करनी की भी मांग करते हैं जो हमें स्वर्ग के निकट कर दे, और तेरा शरण चाहते हैं नरक से एवं ऐसी कथनी और करनी से जो हमें नरक के निकट कर दे।

हे अल्लाह हमें संसार में लाभ दे एवं प्रलय में भी भलाइयां प्रदान करना, एवं नरक के प्रकोप से वंचित रख!

लेखक:

माजिद बिन सुलेमान अल्-रसी

अनुवादक:

तारिक़ बदर सनाबिली